दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, (केरल)
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान

इकाई परख निर्माण

आधार पत्रक (Blue Print)

D EL Ed COLLEGE - AMBADIMALA

प्रशिक्षणार्थी का नाम ....

कक्षा :.. वर्ग : ....

विषय : ....

सत्र : ....

महाविद्यालय का नाम : ....

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

त्यागरायनगर, चेन्नै - 17.

इकाई परख निर्माण

नील नक्शा (Blue Print)

D EL Ed COLLEGE - AMBADIMALA

इकाई मूल्यांकन

इकाई के आधार पर शिक्षण में पाठ योजनाओं का निर्माण किया जाता है। एक इकाई में कई पाठ योजनाओं का निर्माण होता है। मूल्यांकन की नवीन संकल्पना के आधार पर शिक्षण के पश्चात् इकाई मूल्यांकन किया जाता है। इकाई परख निर्माण करने का विशिष्ठ ढंग है, जिसे अपनाने पर परख वैज्ञानिक ढंग से तैयार किया जा सकता है। यही ढंग अर्ध-वर्षिक और वार्षिक परीक्षाओं के लिए प्रश्न पत्र तैयार करने में अपनाया जा सकता है। इसके निम्न चरण है।

1. अभिकल्प (डिझाइन) बनाना
2. नील नक्शा बनाना
3. परख निर्माण
4. उत्तर तालिका तथा अंक योजना निर्माण
5. विश्लेषण पत्रक तैयार करना

अभिकल्प निर्माण में इकाई विशेष के निर्धारित उद्देश्यों, विषय वस्तु व प्रश्नों के प्रकार की दृष्टि से अंक भार को निश्चित किया जाता है तथा विकल्पों व खण्डों (ओप्शन ॲण्ड सेक्षण) की योजना बनाई जाती है।

(क) उद्देश्यों की दृष्टि से अंक भार

क्रम सं.	उद्देश्य	अंक	प्रतिशत
1.	ज्ञान		
2.	बोध		
3.	कौशल / अभिव्यक्ति		
4.	रसग्रहण		
	योग		

(ख) विषय वस्तु की दृष्टि से अंक भार

क्रम सं.	विषय वस्तु या उप इकाई	अंक	प्रतिशत
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			
6.			
7.			
	योग		

भाषा विषय के लिए मात्र

(ग) प्रश्नों के प्रकार की दृष्टि से अंक भार

क्रम सं.	प्रश्न प्रकार	अंक	प्रतिशत
1.	दीर्घोत्तर		
2.	लघूत्तर		
3.	वस्तुनिष्ठ		
	योग		

नील नक्शा बनाना : अभिकल्प बनाने के पश्चात प्रश्न पत्र का नील नक्शा बनाया जाता है। नील नक्शा उस त्रिआयामी चार्ट को कहते हैं जिसमें उद्देश्य, विषय वस्तु, तथा प्रश्नों के प्रकार की दृष्टि से प्रश्न पत्र की सम्पूर्ण रूप रेखा बनाई जाती है जो जाँच प्रश्नों के निर्माण का आधार बनता है। नील नक्शा का नमूना निम्नलिखित है।

नील नक्शा

उद्देश्य	ज्ञान			बोध			कौशल/अभिव्यक्ति			रसग्रहण			योग
प्रश्न प्रकार	दी	ल	व	दी	ल	व	दी	ल	व	दी	ल	व	
उपइकाई विषय वस्तु													
1. 2. 3. 4. 5. 6. 7.													
योग													

टिप्पणी दी : दीर्घोत्तर

ल : लगूत्तर

व : वस्तुनिष्ठ

2) प्रश्नों की संख्या कोष्ठक के अंदर लिखें तथा कोष्ठक के बाहर अंक इंगित करें।

परख निर्माण : नील - नक्शा बनाने हेतु परख या परीक्षण हेतू प्रश्न प्रकार व संख्या को निर्धारित योजनानुसार रखा जाता है।

प्रश्नों के विभिन्न प्रकारों में तीन प्रकार के प्रश्न ले सकते हैं।

1. **दीर्घोत्तर :** परख निर्माण में निबन्धात्मक प्रश्नों को छात्रों की भाषा अभिव्यक्ति, मौलिक चिन्तन के मूल्यांकन हेतु रखा जाता है। किन्तु इन प्रश्नों में भी कक्षा के समय की लघुता (कमी) को ध्यान में रखते हुए वस्तुनिष्ठता लाने का प्रयास किया जाता है।

2. **लघुत्तर :** इन प्रश्नों की सीमा एक दो पंक्तियों या कुछ शब्दों में होती है। इस प्रकार के प्रश्न उद्देश्यों पर आधारित होने चाहिए।

3. **वस्तुनिष्ठ प्रश्न :** इन प्रश्नों का उत्तर संक्षिप्त व निश्चित होता है, और अधिक वैध व विश्वसनीय होता है। इनके निम्नलिखित प्रकार हो सकते हैं।

    1. बेमेल शब्द ढूँढना

    2. रिक्त स्थान पूरक प्रश्न

    3. बहु विकल्पित प्रश्न - वर्तमान में इन्हीं पर अधिक बल दिया जाता है

    4. मिलान पद

इकाई परख प्रश्न

इकाई :

कक्षा :

विषय :

समय : पूर्णांक

निर्देश : 1. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

2.

3.

खंड – अ

खंड – ब

उत्तर तालिका तथा अंक योजना

(खंड – अ)

प्रश्न सं.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
उत्तर															
अंक															

खंड – ब

प्र.क्र.सं.	अपेक्षित उत्तर	अंक योग
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		

प्रश्न वार विश्लेषण पत्रक

क्र.सं.	उद्देश्य	विशिष्टीकरण	उप इकाई	प्रश्न प्रकार	अंक	समय	कठिनाई स्तर
1.							
2.							
3.							
4.							
5.							
6.							
7.							
8.							
9.							
10.							
11.							
12.							
13.							
14.							
15.							
16.							
	योग						

परीक्षा परिणाम

विद्यालय का नाम :

कक्षा : विषय :

क्रम.सं.	छात्र का नाम	प्राप्तांक

नमूनार्थ अभिकल्प

अभिकल्प बनाना : अभिकल्प बनाने हेतु सामान्य नीति निश्चित की जाती है। जिसमें

अ. उद्देश्यों की दृष्टि से अंक भार

ब. विषय वस्तु की दृष्टि से अंक भार

स. प्रश्न प्रकार की दृष्टि से अंक भार निश्चित किया जाता है।

प्रत्येक विषय में अपने विषयों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर निम्न प्रकार से विभिन्न आयामों की दृष्टि से अभिकल्प बनाया जा सकता है।

अ) **उद्देश्यों की दृष्टि से अंक भार :** इसके अन्तर्गत शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों का अंक भार निश्चित किया जाता है। इकाई परख बनाते समय ज्ञान, बोध अभिव्यक्ति कौशल (और आवश्यकतानुसार ज्ञानोपयोग भी) का अंक निश्चित किया जाता है। क्योंकि लिखित परीक्षा द्वारा इन उद्देश्यों की जाँच संभव है। उक्त उद्देश्यों का अंक भार शिक्षण के समय जिस उद्देश्य पर जितना बल दिया गया हो इकाई परख बनाते समय उतने ही अंक देने होंगे।

अंक भार निश्चित करने का एक नमूना

उद्देशों की दृष्टि से अंक भार

क्रम सं.	उद्देश्य	अंक	प्रतिशत
1.	ज्ञान		
2.	बोध		
3.	कौशल/अभिव्यक्ति		
4.	रसग्रहण		
	योग		

विषय वस्तु की दृष्टि से अंक भार : इसके अन्तर्गत इकाई में निहित, उप इकाइयों तथा निहित प्रकरण के अनुसार अंकों का विभाजन किया जाता है। ध्यान वह रखा जाता है, कि प्रत्येक उप-इकाई में जितनी विषय वस्तु की मात्रा है, उसके अनुसार अंकों का विभाजन किया जा सके। विषय वस्तु की दृष्टि से अंक भार निश्चित करने का नमूना निम्न है।

विषय वस्तु की दृष्टि से अंक भार

क्रम सं.	विषयवस्तु/प्रकरण	अंक	प्रतिशत
1.	गद्य / पहला		
2.	पद्य / दूसरा		
3.	व्याकरण / तीसरा		
4.	रचना / चौथा		
5.	पांचवाँ		
	योग		

प्रश्नों के प्रकार की दृष्टि से अंक भार : अभिकल्प बनाने के लिए तीसरा निर्णय यह होता है कि विभिन्न प्रकार के प्रश्नों में से प्रत्येक को कितना अंक भार देना है। यह प्रश्न के प्रकार के ऊपर निर्भर होता है। मुख्यतः तीन प्रकार के प्रश्नों को हम इसमें सम्मिलित करते हैं –

1) दीर्घोत्तर 2) लघूत्तर 3) वस्तुनिष्ठ

इसका नमूना अग्रांकित हैं

क्रम सं.	प्रश्न प्रकार	अंक	प्रश्न संख्या	प्रतिशत
1.	दीर्घोत्तर	3	1	12
2.	लघूत्तर	10	5	40
3.	वस्तुनिष्ठ	12	12	48
	योग	25	18	100

नील नक्शा बनाना : अभिकल्प निश्चित करने के पश्चात परख का नील नक्शा तैयार किया जाता है। नील नक्शा उस त्रिआयामी चार्ट का नांम है जिसे अभिकल्प के अनुसार उद्देश्य, विषय वस्तु, प्रश्नों के प्रकार एवं विकल्प को ध्यान में रखकर बनाया जाता है। नमूना निम्न प्रकार है –

नील नक्शा

उद्देश्य	ज्ञान			बोध			कौशल/अभिव्यक्ति			रसग्रहण			कुल
प्रश्न विषय वस्तु	दी	ल	व	दी	ल	व	दी	ल	व	दी	ल	व	
पहला			1(1)		2(1)								
दूसरा		6(3)	1(1)		1(1)								
तीसरा	3(1)		2(1)	(2(1)	2(2)								
चौथा			1(1)			1(1)							
पांचवाँ			1(1)			1(1)			1(1)				
योग	3(1)	6(3)	6(6)		4(2)	5(5)			1(1)				25(28)

कोष्ठक के अंदर प्रश्न तथा कोष्ठक के बाहर अंक प्रदर्शित किए गये है।

इकाई परख प्रश्न

समय : 40 मिनट

अंक : 25

इकाई : सिन्धु घाटी सभ्यता

निर्देश :
1. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
2. खण्ड "अ" के प्रश्नों के उत्तर प्रश्न के सामने दिए कोष्ठक में अंकित करना है। खण्ड "ब" के लिए अलग पृष्ठ दिये गये हैं।
3. पहले खण्ड "अ के" के प्रश्न हल करो तथा बाद खण्ड "ब" के।

(खण्ड - अ)

समय : 10 मिनट

अंक : 25

1. सिन्दु घाटी सभ्यता के संबंध में विस्तृत जानकारी करने के मार्ग में प्रमुख बाधा क्या है?
   अ. यह सभ्यता, पाँच, छः हजार वर्ष पुरानी है।
   ब. इस सभ्यता से सम्बन्धित लिखित विवरण उपलब्ध नहीं।
   क. खुदाई कार्य में बहुत धन लगता हैं।
   द. खुदाई करने के लिए कुशल श्रमिकों का अभाव है। ( )

2. सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगों का पर्वतीय प्रदेशों से व्यापारिक सम्पर्क था, इसका प्रमाण है –
   अ. खुदाई में तांबे की विभिन्न वस्तुएँ मिलना।
   ब. खुदाई में पत्थर की बनी तराजु मिलना।
   क. खुदाई में कांसे की छड़ मिलना।
   द. खुदाई में देवदार की लकड़ी मिलना। ( )

3. जिस प्रकार आर्य लोक श्रद्धापूर्वक गाय की पूजा करते थे, सिन्धु घाटी के लोग किसकी पूजा करते थे?
   अ. घोडे की ब. बैल की क. भैंस की द. शेर की ( )

4. वर्तमान भारतीय सभ्यता को सिन्धु घाटी सभ्यता की क्या देन है?
   अ. मूर्ति पूजा ब. अग्नि पूजा क. कृष्ण पूजा द. राम पूजा ( )

5. यदि आप सिन्धु घाटी सभ्यता के समय मोहरे बनाने वाले कारिगर होते तो किस पशु का चित्र मोहरे पर बनाने की ओर आपका ध्यान ही नहीं जाता?
   अ. हाथी ब. बैल क. घोड़ा द. बारह सिंगा ( )

6. धार्मिक क्षेत्र में सिन्धु घाटी सभ्यता का वह कौन-सा प्रभाव है, जो आज भी भारतीय जीवन पर देखा जाता है ?

अ. दुर्गा तथा शिव | ब. राम और कृष्ण
क. गणेश तथा हनुमान | द. विष्णु तथा ब्रह्मा ( )

7. सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगों का मुख्य व्यवसाय क्या था ?

अ. कृषि | ब. व्यापार | क. आभूषण बनाना | द. जहाजरानी ( )

8. सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगों की भाषा कैसी थी ?

अ. अच्छी | ब. व्यापार | क. विचित्र | द. सरल ( )

9. मोहनजोदड़ो नगर किस देश में है ?

अ. पाकिस्तान | ब. काश्मीर | क. भारत | द. नेपाल ( )

10. सिन्धु घाटी सभ्यता में नगरों में मुख्य सड़के परस्पर किस कोण पर काटती थीं ?

अ. सरल | ब. विषय | क. सम | द. लंब ( )

11. सिन्धु घाटी सभ्यता की प्रधान फसल कौनसी थी ?

अ. गेहू | ब. गन्ना | क. धान | द. कपास ( )

12. सिन्धु घाटी सभ्यता के लोग किस धातू का सर्वाधिक प्रयोग करते थे ?

अ. कांसा | ब. लोहा | क. चांदी | द. तांबा ( )

(खण्ड - ब)

निर्देश : प्रश्न सं. 23 से 27 में प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का है। प्रश्न सं. 28 के 3 अंक हैं।

23. सिन्धु घाटी सभ्यता में कपड़ा उद्योग की कैसी स्थिति थी ? वर्णन करें।

24. भारतीय भवन निर्माण कला को सिन्धु घाटी सभ्यता की क्या देन है ?

25. आप यह किस आधार पर कहते हैं कि सिन्धु घाटी सभ्यता के लोग ज्यामिति का ज्ञान रखते थे। स्पष्ट कीजिए।

26. इस कथन को प्रामाणित कीजिए कि सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगों के जीवन में मनोरंजन का महत्वपूर्ण स्थान था।

27. भारत उप महाद्वीप के मानचित्र में मोहनजोदड़ो और हडप्पा यशास्थान अंकित करो।

28. सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगों के सामाजिक जीवन की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन करो।

उत्तर तालिका तथा अंक योजना

(खण्ड – अ)

प्रश्न सं.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
उत्तर	ब	द	ब	अ	अ	अ	अ	ब	अ	क	अ	द
अंक	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1

(खण्ड – ब)

प्र.क्र.सं.	अपेक्षित उत्तर	अंक	योग
12.	तांबे का प्रयोग	1	2
	(हथियार बनाना, आभूषण, औजार बनाना)	1	
13.	घरों में तकलियाँ मिली हैं।	1	2
	घरों में सूत कातने का प्रचलन था	1	
14.	सुविधा युक्त भवन का ज्ञान,	1	2
	स्नानगृह, शौचालय नालियों का ज्ञान	1	
15.	समकोण पर काटती मिली हैं	3/4	2
	मकान व्यवस्थानुसार बने मिले हैं	3/4	
	दोनों उदाहरण इस बात के प्रमाण हैं	3/4	
16.	मनोरंजन के प्रमुख स्थान के चार प्रमाण मिले हैं	1/2	2
	नृतकों की मूर्तियाँ तीतर बटेर को लड़ाना	1/2	
	जंगली जानवरों का शिकार करना	1/2	
	पाँसे खेलना	1/2	
17.	मानचित्र बनाकर यशास्थान दिखाने पर		1अ1
18.	वस्त्रों का उपयोग, शारीरिक शृंगार आभूषण, मनोरंजन के साधन, मृतक व्यवस्था — किन्हीं चार का वर्णन करने पर पूरे अंक	1, 1, 1, 1	4

प्रश्नावर विश्लेषण पत्रक

क्र.सं.	उद्देश्य	विशिष्टिकरण	उपइकाई	प्रश्न प्रकार	अंक	समय	कठिनाई स्तर
1.	बोध	विभेदीकरण	सिन्धु घाटी परिचय	वस्तुनिष्ठ	1	1/2	सामान्य
2.	बोध	स्पष्टीकरण	आर्थिक जीवन	वस्तुनिष्ठ	1	1/2	सामान्य
3.	बोध	उदाहरण देना	कला और धर्म	वस्तुनिष्ठ	1	1/2	सामान्य
4.	बोध	सम्बन्ध देखना	कला और धर्म	वस्तुनिष्ठ	1	1	कठिन
5.	ज्ञान	सम्बन्ध स्थापन	कला और धर्म	वस्तुनिष्ठ	1	1	कठिन
6.	ज्ञान	सम्बन्ध स्थापन	कला और धर्म	वस्तुनिष्ठ	1	1	कठिन
7.	ज्ञान	पुनः प्रस्तुतीकरण	आर्थिक जीवन	वस्तुनिष्ठ	1	1	सरल
8.	ज्ञान	पुनः प्रस्तुतीकरण	कला और धर्म	वस्तुनिष्ठ	1	1	सरल
9.	ज्ञान	पुनः प्रस्तुतीकरण	सभ्यता परिचय	वस्तुनिष्ठ	1	1	सरल
10.	ज्ञान	पुनः प्रस्तुतीकरण	नगरों की रचना	वस्तुनिष्ठ	1	1	सामान्य
11.	ज्ञान	पुनः प्रस्तुतीकरण	आर्थिक जीवन	वस्तुनिष्ठ	1	1	सरल
12.	ज्ञान	पुनः प्रस्तुतीकरण	आर्थिक जीवन	वस्तुनिष्ठ	1	3	सामान्य
13.	ज्ञान	पुनः प्रस्तुतीकरण	कला और धर्म	लघूत्तर	2	3	सामान्य
14.	ज्ञान	पुनः प्रस्तुतीकरण	सभ्यता परिचय	लघूत्तर	2	3	सामान्य
15.	बोध	स्पष्टीकरण	नगर रचना	लघूत्तर	2	3	सामान्य
16.	बोध	उदाहरण देना	सामाजिक जीवन	लघूत्तर	2	3	सामान्य
17.	कौशल	स्थान निर्धारण	सभ्यता परिचय	लघूत्तर	2	3	सामान्य
18.	ज्ञान	पुनः प्रस्तुतीकरण	सामाजिक जीवन	दीर्घोत्तर	3	8	सामान्य
	योग				25	35	